परमात्मा की पालना

दिल की कलम से... हिन्दी कविताएँ

बाबा से प्रेरित यह विशेष कविताएँ जो आपमें पुरुषार्थ की उमंग भर देंगी !

These poems are written upon inspirations by Shiv Baba during Amrtivela time Yog. These special poems brings you the pure joy of wisdom of Gyan Murli, explaining Baba's Shrimat and making our Purusharth feel easy.

Poems by **Brahma Kumar Mukesh bhai** (Rajasthan, India).
If you have any query or want to find old poems, contact BK Mukesh via email bkmukesh1973@gmail.com
OR WhatsApp message: +919460641092

www.shivbabas.org (Main BK Website)
www.bkgoogle.org (BK Google)

अनुक्रमणिका

बाबा की प्रेरणाएं

प्रवृत्ति मार्ग वालों को बाबा का डायरेक्शन
बदल गया मेरा संसार
परमात्मा का कर्तव्य
बाबा का सपना
सारी दुनिया इश्वरीय परिवार
शांति की शक्ति
अमृतवेला का अनुभव
८४ का चक्र लगाओ
अनमोल शिक्षा
बाबा की अंतिम शिक्षा

पवित्रता पर कविताएँ

पवित्रता का श्रृंगार लाए बहार
सम्पूर्ण पवित्रता का फल
सम्पूर्ण पवित्रता
स्वर्ग की बादशाही का ईनाम
पवित्रता अपनाओ जीवन अनमोल बनाओ

भारत के लिए कविताएँ

दिव्यता अपनाओ भारत को स्वर्ग बनाओ
स्वर्णिम नव प्रभात
परमात्मा का प्यार सुखी बनाये संसार
सच्ची आजादी

त्यौहार पर विशेष

सच्ची दिवाली मनाये
रक्षा बंधन का त्यवहार
नारी शक्ति ;पउमदश्े वलद्ध
राखी पर कविता

पुरुषार्थ के लिए कविताएँ

बाबा मुझमें नज़र आये
सर्व श्रेष्ठ पार्ट बजाओ
हर दिन एक अवसर
प्यार का सागर बन जाऊँ
ब्राह्मण जीवन की सफलता
वैराग्य से सहज योग
अष्ट रतन की विशेषता
पहला नंबर लेंगे
बाबा से प्यार
श्रेष्ठ राजयोगी कहलाओ
अपने घर हम जाएंगे

GENERAL

बदल अपनी जीवन (संगम युग)
स्मृति दिवस (ब्रह्मा बाबा)
प्यार की दुनिया बनाओ
प्रीत बुद्धि की निशानियाँ
बाँधेली का सौभाग्य
प्रकृति को पवित्र बनाओ
समस्या का समाधान
प्राकृतिक आपदाओं से कैसे बचें
सरलचित स्वभाव से सफलता
मान सम्मान की इच्छा से मुक्त

बाबा की प्रेरणाएं

प्रवृत्ति मार्गवालों को बाबा का डायरेक्शन

खुश हूँ देखकर प्रवृत्ति मार्गवालों की अवस्था
प्रवृत्ति और निवृत्ति के मध्य सुन्दर है व्यवस्था

बाप की याद की छत्रछाया के नीचे रहनेवाले
माया के सर्व आकर्षणों से बचकर रहनेवाले

ऐसे न्यारे निराले बच्चों के बाबा गुण गाता है
सच्चाई पर चलने वालों पर राज़ी हो जाता है

प्रवृत्ति का नियम है हर छोटी बात को समाना
किसी भी सूरत में कोई व्यर्थ नहीं फैलाना

छोटी मोटी बात अगर हम इधर उधर फैलाएंगे
तो विश्व कल्याण के कार्य से वंचित हो जाएंगे

हो जाओ राज़ी ज्ञान के हर राज़ को जानकर
ख़त्म करो व्यर्थ बातें तुम मेरा कहना मानकर

चाहते हो यदि मुझसे तुम सच्चा मिलन मनाना
सर्व प्रथम खुद को साकारी से आकारी बनाना

आपके लिए बनता हूँ मैं निराकारी से साकारी
तुम भी बनो फिर मेरे लिए साकारी से आकारी

मिलन का आनंद आएगा जब होंगे एक सामान
एक बाप दूजा मैं तो फिर तीसरे का क्या काम

इतनी शुद्ध घनिष्टता बापदादा से बढ़ाते जाओ
प्रवृत्ति में रहकर कमल पुष्प समान बन जाओ

ॐ शांति

बदल गया मेरा संसार

भूलकर अपना सत्य स्वरूप दुख ही मैंने पाया
इन्द्रियों का मैं दास बना मालिक बन गई माया

विकारों के कीचड़ में धंसकर पाप करता गया
अवगुण अपनाकर अपने विवेक से मरता गया

खा गई माया मुझे विकारों के जाल में फंसाकर
अब कौन मुझे निकाले उसके जबड़े से बचाकर

रो रोकर मैंने अपना दुखड़ा हर एक को सुनाया
लेकिन इसका समाधान मुझे कोई बता न पाया

परमधाम से अवतरित हुआ शिव पिता भगवान
उसने ही आकर बताई मुझे मेरी असली पहचान

दु:ख पाने का सही कारण उसने ही मुझे बताया
राजयोग सिखाकर दैहिक अभिमान से छुड़ाया

राजयोग के द्वारा मेरा देहभान से हुआ किनारा
ईश्वरीय मत अपनाकर बाबा का मैं हुआ प्यारा

मुक्त हुआ हूँ दुखों से पाता जा रहा सुख अपार
बाबा की शिक्षाओं से ही बदल गया मेरा संसार

ॐ शांति

शिव परमात्मा का कर्तव्य

घनघोर रात की उतरन पर चुपके से आता हूँ
अज्ञान नींद में सोई हर आत्मा को जगाता हूँ

आता जो मेरे संपर्क में भूल जाता वो देहभान
पल भर में पांच विकारों से अनजान

जमा लेते है संसार में जब विकार अपना डेरा
मुक्ति दिलाता हूँ विकारों से काम यही है मेरा

सुखी जीवन जीने की सही विधि सिखाता हूँ
मैं गीता ज्ञान सुनाकर मानव को देव बनाता हूँ

याद दिलाता हूँ अपने बच्चों की सत्य पहचान
याद दिलाऊंबच्चों को भूला हुआ आत्मभान

मिलता हूँ अपने बच्चों से संगमयुग में आकर
घर ले जाता हूँ बच्चों को पूरा पावन बनाकर

भेजता हूँ बच्चों को सतयुगी दैवी स्वराज्य में
पद पाते उतना जितना लिखते अपने भाग्य में

मेरा परिचय जानकार बच्चों करो यही तैयारी
परमधाम चलने के लिए बनो निर्विकारी

ज्ञान योग के बल से सम्पूर्ण पावन बन जाओ
दैवी दुनिया सतयुग में जाकर पद ऊँचा पाओ

ॐ शांति

बाबा का सपना

अपना शिव पिता हमें घर की राह बताने आया
आत्म अभिमानी बनो सबको यह समझाने आया

चलो अपने घर की ओर भूलकर अपने तन को
समझो ख़ुद को आत्मा ईश्वर में लगाओ मन को

तन को जब कोई त्यागे तो बंद कर दो तुम रोना
विनाशी है तन अपना इसको तो इक दिन खोना

आत्म भान को अपनाकर मोहजीत बन जाओ
सूर्यवंशी देवता बनने की मन में लगन लगाओ

अपने घर का रास्ता पकड़ो आत्म निश्चय होकर
पावन तुम बनते जाओ प्रभु की याद में खोकर

विकर्म करके नहीं डुबाओ अपने भाग्य की नैया
श्रीमत की पतवार थामकर नैया के बनो खिवैया

शुद्ध संकल्पों द्वारा भाग्य भवन बनाओ अपना
पावन बनकर पूरा करो बाबा ने देखा जो सपना।

ॐ शांति

सारी दुनिया ईश्वरीय परिवार

ओ मीठे बाबा हम तेरे सारे अरमान पूरे करेंगे
इस पतित पुरानी दुनिया से हम जीते जी मरेंगे

कर लिया है हमने इरादा स्वर्ग धरा पर लाएंगे
ख़ुद को भी हम लक्ष्मी नारायण समान बनाएंगे

रोज़ करते जायेंगे हम अपने संस्कारों में सुधार
आधार मूर्त बनकर हम करेंगे जगत का उद्धार

देते जाएंगे सारी दुनिया को शांति का सकाश
फैलाएंगे हम सारे जग में पवित्रता का प्रकाश

हमारे चेहरे से बाबा की प्रत्यक्षता होती रहेगी
६३ जन्म के बाद जुदाई पर माया रोती रहेगी

चलते रहेंगे हम सदा बाबा से होकर योगयुक्त
माया रावण से हम प्रतिदिन होते जायेंगे मुक्त

हर दु:खी आत्मा के जीवन में खुशियाँ लाएँगे
सारी दुनिया को हम ईश्वरीय परिवार बनाएंगे।

ॐ शांति

शांति की शक्ति

शांत स्वरूप मैं आत्मा बाबा से मिली यह पहचान
शान्तिधाम की निवासी मैं शांति सागर की संतान

शांति की यह शक्ति हमारे बड़ी काम आने वाली
सभी परिस्थितियों में निर्णय शक्ति बढ़ाने वाली

देही अभिमानी स्थिति ही शांति का बल बढ़ाती
दैवी गुण आते है और हर प्राप्ति सहज हो जाती

अमृत वेले के समय भरो ख़ुद में शांति की शक्ति
सदा के लिए मिल जाएगी माया से तुमको मुक्ति

बाहर न ढूंढ़ो इसको शांति तुम्हारे गले का हार
शांति अवश्य आएगी जब करोगे इस पर विचार

अपने जीवन को शांति से इतना भरपूर बनाओ
अपने चलन चेहरे से शांति मूरत कहलाओ

शांति की शक्ति को जिसने भी मन से अपनाया
हर इक असंभव कार्य को उसने संभव बनाया

शांत स्वरूप रहने का जो करता रहता अभ्यास
सम्पूर्णता की मंझिल सहज आती उसके पास

सबको तुम देते जाओ शांति की शक्ति का दान
कल्याण समाया हुआ इसमें यह सेवा बड़ी महान

शांति की शक्ति अपने अंदर इतनी तुम बढ़ाओ
प्रभु से सौगात स्वरूप शांति का साम्राज्य पाओ

ॐ शांति

अमृतवेला का अनुभव

पावन क्षण अमृतवेला के हुआ मैं शान्त स्वरूप
बाबा से मिलन मनाऊँ धारण कर बिन्दु स्वरूप

पावन मिलन की स्मृतियों में मन मेरा है खोया
परमात्म प्यार की लहरों में खुद को मैंने डुबोया

धन्य हुआ बाबा की अलौकिक मुस्कान पाकर
बाबा का रूप मैं रखूंगा दिल में सदा बसाकर

पलक नहीं झपकती मेरी बाबा को निहारते हुए
थकते नहीं बाबा भी मुझ पर प्यार बरसाते हुए

बाबा का लाइट माइट रूप मेरे सम्मुख आया
दिव्य प्रकाश से आलोकित ख़ुद को मैंने पाया

पवित्रता की प्रतिज्ञा बाबा ने याद मुझे दिलाई
मैंने भी बाबा के आगे फिरसे प्रतिज्ञा दोहराई

बाबा का वरदानीमूरत हाथ मैंने सर पर पाया
अपना पवित्र स्वरूप इमर्ज होता ख़ुद में पाया

ॐ शांति

८४ का चक्र लगाओ

८४ जन्मों में पक्का किया चक्र लगाने का संस्कार
संगमयुग में भी बच्चों चक्र लगाते रहना बारंबार

कभी जाना वतन में कभी अपनाना दुनिया साकार
देवलोक की सैर पर जाना करके तुम सोलह श्रृंगार

बनकर मंदिर की मूरत नैया कर देना सबकी पार
श्रेष्ठ ब्राह्मण बनकर तुम करते जाना ख़ुद का सुधार

उड़कर जाना परमधाम में बनकर बिंदी निराकार
पावन बनने की वेला कल्प में आती एक ही बार
स्व परिवर्तन करने में तुम मत करना सोच विचार

माया लेकर ही आएगी क्षणिक खुशियों के उपहार
बाप की याद में रहना मत करना उनको स्वीकार
अपना स्वदर्शन चक्र चलाता रहता है जो बारंबार

नरक से स्वर्ग में बदल जाता है उसके लिए संसार

ॐ शांति

अनमोल शिक्षा

श्रीमत के विरुद्ध अगर कोई भी खयाल आएगा
ऐसा खयाल सदा शैतानी खयाल ही कहलाएगा।

आलस के वश मत दो तन को थोड़ा भी आराम
मेरे साथियों आराम को तुम समझो सदा हराम।

झूठ बोलकर अपनी गलती कभी नहीं छुपाओ
कुछ भी पड़े सहन करना सच ही बोलते जाओ।

सेवाओं से बचने का कोई बहाना नहीं बनाओ
समय, श्वांस और संकल्प सब सेवा में लगाओ।

दूसरों का धन पाने का खयाल लाभ न लाओ
दौलत की हवस के शिकार में कभी न आओ।

घात लगाए बैठी माया करती मौके की तलाश
कैसे भी हम सबको हो जाए माया पर विश्वास।

क्षणिक भूल ही माया को मौका देकर जाएगी
माया बच्चों का नाक कान काटकर ले जाएगी।

करके निरन्तर याद बाप को करो अपनी रक्षा
बाप देते अपने बच्चों को यही अनमोल शिक्षा।

ॐ शांति

बापदादा की अन्तिम शिक्षा

आने वाला है मेरे बच्चों समय बड़ा ही भयानक
बदल जाएगा सब कुछ इस दुनिया में अचानक

दिखाई देती हैं जो बड़े बड़े भवनों की यह कतारें
मिल जायेंगे मिट्टी के ढ़ेर में सुंदर सभी नज़ारे

चारों तरफ सिर्फ लाशों का ढ़ेर ही दिखाई देगा
तड़प तड़पकर मरने वालों का शोर सुनाई देगा

भुखमरी होगी इतनी एक रोटी भी न पाओगे
भूख प्यास के मारे अपना दम तोड़ते जाओगे

तन यह तुम्हारा केवल रोगों का घर बन जायेगा
इलाज के लिए तुम्हें डॉक्टर भी न मिल पायेगा

जो तुम्हारे अपने है वे खून के प्यासे हो जायेंगे
सभी सहारे जीवन के हर पल छूटते ही जायेंगे

जीवन नहीं रहेगा तब किसी के लिए आसान
ऐसे में अगर तुमको आ भी गया भगवान्

बोलो क्या तुम कर्मों का हिसाब चुका पाओगे
क्या इस हालत में खुद को पावन बना पाओगे

सोचो और विचारो बच्चों यह बात बड़ी गंभीर
देखकर तुम्हारा अलबेलापन हो गया मैं अधीर

करते नहीं काम एक भी जो तुम्हें समझाता हूँ
ऐसा लगता जैसे भैंस के आगे बीन बजाता हूँ

ओ मेरे दुलारों कब तक मैं तुमको समझाऊंगा
सुधर भी जाओ वरना मैं धर्मराज बन जाऊंगा

नहीं सुनूंगा बात तुम्हारी मैं डंडे ही बरसाऊंगा
कड़ी सजायें खिलाकर तुमको घर ले जाऊंगा

मेरी यह अन्तिम शिक्षा तुम जीवन में अपनाओ
अपने कदमों को पावनता के पथ पर बढ़ाओ

ॐ शांति

पवित्रता पर कविताएँ

पवित्रता का श्रृंगार लाए बहार

तन मंदिर के ऊंच सिंहासन पर मैं विराजमान,
मैं हूँ चमकती हुई आत्मा शुद्ध मणी के समान

मेरे गुण स्वधर्म की याद ज्ञान सागर ने दिलाई,
उसी गुणों के सागर से मिलने उड़कर मैं आई

मेरे मीठे फूल बच्चे कहकर उसने मुझे बुलाया,
शुभ शिक्षाओं के झूले में प्यार से मुझे झुलाया

चुनरी ओढ़ी पवित्रता की श्रेष्ठ भाग्य मैंने पाया,
सच्ची सुहागन आत्मा परमात्मा ने मुझे बनाया

सद्गुणों का श्रृंगार कर उसने मुझको महकाया,
मेरा यह जीवन पवित्रता के कमल जैसा बनाया

पवित्रता से बनी ईश्वर के दिलतख्त का श्रृंगार,
ख़ुद की पवित्रता पर ही आया है मुझको प्यार

पवित्रता की विशेषता को सच्चाई से अपनाया,
पवित्र स्वरूप और स्वधर्म को यादों में सजाया

पवित्रता के बल से रूहानी सुंदरता को पाया,
इसी गुण ने मुझे सफ़लता का शिखर दिलाया

ॐ शांति

सम्पूर्ण पवित्रता का फल

नाश न कर तू ख़ुद का भोगकर विषय विकार
पवित्रता अपनाकर तू ख़ुद पर ही कर उपकार

रोग हज़ारों पाएगा तू विकार अगर अपनाएगा
दुःखी होकर जीएगा तू दुःखी होकर मर जाएगा

विकारों से तुझ में तन मन की दुर्बलता आएगी
तेरी खुशनुमा ज़िन्दगी नर्क समान बन जाएगी

हिम्मत न रहेगी तुझमें न रहेगा आत्मविश्वास
बर्बाद करेगी पूरा तुझको विकारों की ये प्यास

ख़ुद को तू अनेक उलझनों में फंसता जाएगा
करना चाहेगा बहुत कुछ किन्तु कर न पाएगा

पवित्रता की धारणा से मनोबल तुझमें आएगा
जो कुछ चाहता है जीवन में वो सब तू पाएगा

बड़ी कठोर और मज़बूत है विकारों की चट्टानें
आत्म स्मृति के हथौड़े इन पर होंगे तुझे लगाने

प्रहार इन पर करता जा तू निरन्तर और भरपूर
कर दे इन पांचों विकारों को पूरा ही चकनाचूर

ख़ुद को रोज़ पिलाता चल तू पवित्रता की घट्टी
ईश्वरीय स्मृति से न लेना एक पल की भी छुट्टी

एक पल का अलबेलापन तुझे धोख़ा दे जाएगा
तेरा सारा पुरुषार्थ फिर से शून्य पर आ जाएगा

ख़ुद में जलाकर रखना प्रचण्ड योग की ज्वाला
केवल यही अभ्यास तुझको पवित्र बनाने वाला

दैहिक आकर्षण से जब तू पूरा मुक्त हो जाएगा
सबको अपने आत्म स्वरूप का दर्शन दे पाएगा

तुझे देखकर जब कोई ख़ुद को पावन बनाएगा
सम्पूर्ण पवित्रता की श्रेष्ठ मंज़िल तब ही पाएगा

यही सम्पूर्ण पवित्रता तुझको फ़रिश्ता बनाएगी
दुखों से मुक्ति दिलाकर तुझे स्वर्ग में पहुंचायेगी

ॐ शांति

सम्पूर्ण पवित्रता

पूजा होगी जग में तुम्हारी श्रेष्ठ कर्म अपनाओ
मन की पावनता को कर्मों का आधार बनाओ

व्यर्थ अशुद्ध विचारों से ख़ुद को मुक्त बनाओ
पवित्रता की यथार्थ परिभाषा समझते जाओ

हर आत्मा से समान सम्बन्ध सम्पर्क निभाओ
सम्पूर्ण पवित्रता के लिए सर्व कमियां मिटाओ

सूक्ष्म अशुद्धि रह गई तो पूज्य न बन पाओगे
खण्डित मूर्ति जैसे ही बच्चों तुम रह जाओगे

मनसा वाचा कर्मणा की अपवित्रता मिटाओ
सम्पूर्ण पवित्र बनकर पूज्य आत्मा कहलाओ

पवित्रता की कसौटी पर जांच ख़ुद की करना
मैं हूँ सम्पूर्ण शुद्ध आत्मा याद यही तुम करना

ॐ शांति

स्वर्ग की बादशाही का ईनाम

भूल किसी की देखकर मन तेरा क्यों उखड़ा
छोड़ दे उदासी और खिला ले अपना मुखड़ा

सेवा स्थान पर तुझे मिलेंगे कई टकराने वाले
तेरे मन की अवस्था धरातल पर गिराने वाले

अपना मन प्रभु याद से इतना मज़बूत बना ले
किसी का भी व्यव्हार तुझ पर असर न डाले

कर्म औरों के देख़कर संस्कार तेरे न बिगड़े
तेरा भाग्य भवन कहीं परचिंतन में न उजड़े

प्रभु के संग रहकर तू बन जा अचल अडोल
कड़वे बोल सुनकर भी तू सदा मीठा ही बोल

तेरे संकल्प ही बनेंगे तेरे भविष्य का आधार
निशदिन करता जा अपने संकल्पों में सुधार

छोड़ इच्छा पाने की दुनिया वालों से सम्मान
तुझे दिलतख्त पर बिठाने आया ख़ुद भगवान

सम्मान देना सबको समझकर ईश्वरीय संतान
ऐसे श्रेष्ठ कर्म कर जो खुश हो जाए भगवान

अपने व्यवहार से बाला करना ईश्वर का नाम
स्वर्ग की बादशाही का मिलेगा तुझको ईनाम

ॐ शांति

पवित्रता अपनाओ जीवन अनमोल बनाओ

इधर उधर देखते हुए जब नज़र मुझे वो आई
सोच न कुछ मैं पाया वो इतनी मन को भाई

शुरू हुई कोशिश मेरी उसके करीब आने की
कोशिश सफ़ल हुई उससे पहचान बढ़ाने की

मौका पाते ही आख़िर मैं उसके क़रीब आया
अपना परिचय बताकर उसका परिचय पाया

रूप रंग से अच्छी थी अब बातों से भी भाई
अपनी इच्छा मैंने एक पल में उसको बताई

चाहता हूँ ओ सुंदरी तेरे संग जीवन बिताना
अगर हो स्वीकार तुम्हें तो ज़रा मुझे बताना

बोली वो हंसकर क्या इतना है मुझसे प्यार
प्रणय निवेदन तुम्हारा करती हूँ मैं स्वीकार

सुनकर उसकी ये बात मन में प्रसन्नता छाई
मन ने सोचा मिलन की घड़ी आई की आई

सुंदरी ने बड़े आदर से अपनी इच्छा जताई
शादी से पूर्व रखो मुझसे एक माह की जुदाई

दिल को समझाकर मैंने ये शर्त करी स्वीकार
आखिर उस सुंदरी से था मुझको बेहद प्यार...

...बीता एक माह तो पहुंचा मैं सुंदरी के पास
देखकर सुंदरी को उड़ गए मेरे होश-हवास

सुंदरी के तन को जब मेरी नज़रों से जांचा
नज़र आने लगी वो केवल हड्डियों का ढ़ांचा

रोते हुए मैंने पूछा तन को कैसा रोग लगाया
अपनी सुंदरता को तुमने बोलो कहाँ गंवाया

सुंदरी ने कहा कि मैंने रोज़ दो गोलियां खाई
एक से लगे दस्त मुझे और एक से उल्टी आई

एक महीने दवाई खाकर मैंने ये अवस्था पाई
उल्टी दस्त करके मैंने अपनी सुंदरता गंवाई

करो विश्वास मेरा बाजू वाले कमरे में जाओ
उल्टी दस्त से भरे हुए दो घड़े देखकर आओ

सचमुच बाजू वाले कमरे में जाकर जब आया
सुंदरी को देखकर मैं मन ही मन में पछताया

सुंदरी बोली ऐसी सुंदरता पर तुम मरते हो
बोलो क्या सचमुच मुझसे ही प्यार करते हो

चमड़ी की सुंदरता पर धोख़ा तुम न खाओ
तन के भीतर है गन्दगी खुद को ये समझाओ

पवित्रता है अनमोल तुम इसको ही अपनाओ
अपने मूल्यहीन जीवन को अनमोल बनाओ

ॐ शांति

भारत के लिए कविताएँ

दिव्यता अपनाओ भारत को स्वर्ग बनाओ

जाने किस नींद में सोया रह गया आत्मा राजा
लूट लिया रावण ने उसे खोले बिना दरवाज़ा

किस चोर दरवाज़े से रावण अन्दर घुस आया
बिना खबर के हमारा सब कुछ उसने चुराया

दिव्यता के सुन्दर महल को खण्डहर बनाया
दीवारों दरवाज़ों पर विकारों का छिद्र बनाया

राज कुंवर जैसा सुन्दर मन पूरा बेलग़ाम हुआ
पवित्रता को हारा खेलकर देहभान का जुआ

घर घर में बहते प्यार के झरने सारे सूख गए
बंजर हुई धरती बरसने वाले बादल रूठ गए

धन के हुए ग़ुलाम गिरी नैतिकता दलदल में
विश्वास करने लगे सारे केवल धन के बल में

पतन की ओर बढ़ते सब रुक न कोई पाता
नरक हो गया जीवन समझ नहीं क्यों आता

पहचानों हे इंसानों तुम अपनी सत्य पहचान
समझाने आया तुम्हें शिव परमात्मा भगवान

सुना रहा हम सबको वो सत्य गीता का ज्ञान
अपनाकर ये ज्ञान तुम बन जाओ देव समान

छोड़ो विकारी जीवन दिव्यता को अपनाओ
देवभूमि इस भारत को फिर से स्वर्ग बनाओ

ॐ शांति

स्वर्णिम नव प्रभात

खोलकर अपने ज्ञान नयन करो शिव का नमन
स्वर्णिम नव युग का अब होने वाला है आगमन

दु:ख भरी दुनिया की उम्र प्रतिपल घटती जाए
सुखमई प्रभात किरण हर ओर बिखरती जाए

अलसाना अब छोड़ो तुम पलकें अपनी खोलो
आत्मस्वरूप की स्मृति रखकर ॐ शांति बोलो

समाई है खुशियां अनेक सुप्त पड़ी कलियों में
सुख के दाने भी निकलेंगे बंद पड़ी फलियों में

भोर की मस्त हवाओं में मन पंछी को उड़ने दो
हो जहाँ सुख चैन उस गली में इसको मुड़ने दो

एकजुट होकर पंछियों सा कलरव करते जाओ
सबकी अज्ञान निंद्रा को खण्डित करते जाओ

नवजीवन नवयुग का तुम सृजन करो मिलकर
नज़र आओ सबको कमल पुष्प सा खिलकर

सुगन्धित पुष्प समान अपनी आभा फैलाओ
दिव्य प्रकाश पुंज बनकर नव प्रभात ले आओ

ॐ शांति

परमात्मा का प्यार सुखी बनाए संसार

अलौकिक जीवन की बाप से मिली मुझे बधाई
दु:ख जीवन से दूर हुए खाकर दिलखुश मिठाई

हाथ पकड़कर बाबा ने हमें वतन की सैर कराई
अवगुण सभी मिटाकर आत्मा की चमक बढ़ाई

गोदी पाकर बाप की फूलों जैसा जीवन खिला
औरों को भी बाटेंगे जो प्यार बाप से हमें मिला

दूर करेंगे दु:ख औरों के शांति की राह दिखाकर
खजानों से सम्पन्न करेंगे बाप का उन्हें बनाकर

मुझको बाप से मिली अथाह खुशियों की खान
लहर फैलाऊं संसार में आये परमपिता भगवान्

बाप समान मैं करता जाऊं सबके दुखों को दूर
आनन्द प्रेम शांति से कर दूँ हर मन को भरपूर

प्यारा बाबा आया ये दस्तक हर मन पर दे आऊं
बिछुड़े हुए बच्चों को मैं परमपिता से मिलवाऊं ।

ॐ शांति

सच्ची आज़ादी

पांच विकारों से जब तक नहीं पाएंगे आज़ादी
रोक न पाएंगे हम तब तक भारत की बर्बादी

जब से हम सब हुए हैं पांच विकारों के ग़ुलाम
तब से हमारी दैवी संस्कृति हो रही बदनाम

छल कपट को बनाया हमने उन्नति का आधार
कर्ज़ में डूब गया है भारत धन ले लेकर उधार

मन बुद्धि की स्वच्छता कितनी हो गई मलीन
स्वार्थ फैला नस नस में जैसे मिट्टी कण महीन

लोभ लालच का कीड़ा फैला रहा भ्रष्टाचार
इक दूजे से करने लगे सब स्वार्थयुक्त व्यवहार

अपने लालच के वश भूल गए देश का विकास
करनी मुश्किल हो रही भारत माँ की पूरी आस

देखो हमारे मन के विचार हो गए इतने संकीर्ण
अपने स्वार्थवश करते अपनों का हृदय विदीर्ण

दुःख देकर किसी को मन कभी नहीं पछताता
दिल हुए पत्थर के इसलिए रोना भी नहीं आता

धोखा देकर अपनों को ख़ुशी का अनुभव करते
पाप करते समय हम भगवान् से भी नहीं डरते...

...किए जा रहे पापकर्म जैसे हो अपना अधिकार
भ्रष्ट हो गए हैं इतने कि भूल गए सब शिष्टाचार

कैसे पाएं अपनी संस्कृति की खोई हुई प्रतिष्ठा
कैसे जागे अपने मन में इक दूजे के प्रति निष्ठा

नहीं रहेंगे सुख सदा जो पाए हों छल कपट से
गुम होंगे वो ऐसे जैसे दृश्य हटता है चित्रपट से

एक ही बात ज्ञान की है समझो इसे गहराई से
सच्चा सुख मिलेगा केवल दिल की सच्चाई से

सप्त गुणों से सजी हुई हम आत्माएं सतोप्रधान
यह स्मृति जगाकर हो जाएं विकारों से अनजान

विकारमुक्त जीवन बनता है सुख शांति सम्पन्न
दु:ख सारे मिट जाते खुशियां होती रहती उत्पन्न

न सताए जब विकारी दुनिया का कोई संस्कार
सबका हितकारी हो जब अपना हर एक विचार

पाने की आशाएं छोड़ करते जाएं सबको प्यार
सम्पूर्ण पवित्रता अपनाकर मिटाएं सभी विकार

विकारी जीवन से जब पूरी मुक्ति मिल जाएगी
सच्चे अर्थों में वही हमारी आज़ादी कहलाएगी ।

ॐ शांति

पुरुषार्थ के लिए कविताएँ

बाबा मुझमें नजर आए

ना पीड़ मुझे ना दर्द मुझे करे कोई अपमान मेरा
छप ही गया अब तो मेरे दिल पर बाबा नाम तेरा

रक्त के संग संग मेरी नस नस में तुझको समाया
तेरा बनकर हो गया मैं तो सारी दुनिया से पराया

चढ़ा है रंग सुनहरा मेरे मन की सभी दीवारों पर
तेरे प्यार के बल ने मुझे जीत दिलाई विकारों पर

पावनता की सीढ़ी पर तूँ मुझको हर रोज चढ़ाए
मुझसे ही पुरुषार्थ करवाकर मेरी तकदीर बनाए

इतना प्यार करने वाले बाबा को नहीं भुलाऊंगा
सब कुछ सहन करके पावन स्वयं को बनाऊंगा

परिस्थिति का नहीं पड़ेगा मुझ पर कोई प्रभाव
प्रतिदिन पावन बनाता रहूंगा मैं अपना स्वभाव

कांटे आए चाहे अंगारे कोई रोक मुझे ना पाएगा
मेरा हर कदम अब श्रीमत पर ही चलता जाएगा

सहनशक्ति की पराकाष्ठा को छूकर दिखलाऊंगा
बाबा मुझमें नजर आए स्वयं को ऐसा बनाऊंगा

ॐ शांति

सर्वश्रेष्ठ पार्ट बजाओ

भृकुटि सिंहासन पर बैठकर प्रकाश मैं फैलाऊँ
मेरा प्रकाश स्वरूप देखकर मन ही मन हर्षाऊँ

तन से होकर न्यारा अपने मूल वतन को जाऊं
परमपिता की ममता भरी गोद में आराम पाऊँ

बाबा का वरदानी हाथ मैं अपने सिर पर पाऊँ
बाबा की रूहानी बाहों में खुशी से झूम जाऊँ

कहा बाप ने बच्चों को जीवनमुक्ति देने आया
गुण और शक्तियों से तुम्हें भरपूर करने आया

मेरी यादों की अग्नि में विकार सभी जलाओ
रूहानी सुख शांति का अधिकार मुझसे पाओ

बाप की याद में खोकर निरन्तर मौज मनाओ
देह की समस्त विकृतियों को जड़ से मिटाओ

पवित्रता की किरणों से खुद को भरपूर बनाओ
दिव्य गुणों से सजकर पावन धरती पर आओ

कहा बाप ने बच्चों तुम हो मेरे गुलाब रूहानी
पवित्रता की खुशबू ही तुम्हें चारों और फैलानी

पवित्रता के सौन्दर्य से बाप को मोहित करना
स्वर्ग का अधिकार इसी विधि से प्राप्त करना

तुम्हारे हर सुख की चिंता करता खुद भगवान
जरा सोचो बच्चों तुम्हारा भाग्य कितना महान

गोद में बिठाकर तुम्हें बनाऊँ फूलों के समान
21 जन्मों की राजाई लिखता हूँ तुम्हारे नाम

विकारों के दलदल से बच्चों तुम निकल जाओ
स्वर्ग की राजाई पर अपना अधिकार जमाओ

प्रभु संग के रंग में खुद को पावन गोरा बनाओ
सृष्टि रंगमंच पर अपना सर्व श्रेष्ठ पार्ट बजाओ

ॐ शांति

हर दिन एक अवसर

हर दिन एक अवसर है कुछ नया करने का
नए ढंग से जीने का पुराने ढंग से मरने का

अपनी गलतियों से खुद ही खुद सुधरने का
सबल होकर फिर से कर्मक्षेत्र पर उतरने का

तो करें तैयारी जगाकर आशा और विश्वास
आज करेंगे हम अपने जीवन में कुछ खास

अपने सामने आज है बीत गई कल की रात
नए नए विचारों से हम आज करें मुलाकात

अपना स्वार्थ त्यागकर बन जाएं ईमानदार
श्रेष्ठ चरित्र बनाएं हम जगाकर शुद्ध विचार

दृढ़ता सम्पन्न होकर बदलें अशुद्ध संस्कार
खुद में देवत्व जगाने का स्वप्न करें साकार

पांच विकारों को हम सब योग बल से मारें
जीत जाएं हम रावण से हम कभी ना हारें

राम कृष्ण के संस्कारों को जीवन में उतारें
दिव्यता अपनी देखकर हमें ही सब निहारें

ॐ शांति

प्यार का सागर बन जाऊं

ये साँसे आते जाते एक तेरा नाम ही कहती है
मेरी दोनों आँखे सिर्फ तेरी ही याद में बहती है

ऐसा क्या जादू डाला तुमने हो गया हूँ मैं तेरा
उठा लिया है मैंने अब पुरानी दुनिया से डेरा

बसे हो ऐसे मुझमें जैसे बहता है नसों में रक्त
मिलन मनाऊं तुझसे बाबा होकर मैं अव्यक्त

तेरी श्रीमत से बन जाऊं खिलता हुआ गुलाब
मेरे चेहरे चलन से झलके पवित्रता का रूहाब

तेरी गोद में खाता रहूँ बस तेरे प्यार का झूला
तेरे संग रहकर मैं तो माया का नाम भी भूला

सब कुछ फीका लगता हमें तेरे प्यार के आगे
तेरे प्रेमरस में नहाने को हम अमृत वेला जागे

बड़े प्यार से पहनाते हो मुझको बाहों का हार
दिल में ठान लिया तुम पर हो जाऊं बलिहार

प्यार पाकर तेरा मैं प्यार का सागर बन जाऊँ
हर प्यासी आत्मा की प्यार की प्यास बुझाऊँ

ॐ शांति

ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार

हर परिस्थिति आती हमें कुछ ना कुछ सिखाने
विघ्नों पर जीत दिलाकर अनुभवी मूरत बनाने

असफलता ही सफलता का आधार कहलाती
सफलता का स्वाद हमें असफलता ही चखाती

परिस्थितियां हमेशा सिखाने का अवसर लाती
हमारे अन्दर दिव्य गुण का विकास कर जाती

धन की क्षति होने पर मन में आए यही विचार
एक ना एक दिन मिट जाएगा ये सारा संसार

नजरों से जो दिखाई देता है वो सब होगा नष्ट
यही अभ्यास करें तो अन्त समय ना होगा कष्ट

देह का कोई सम्बन्धी यदि छोड़कर हमें जाए
नष्टोमोहा बनने का इरादा मजबूत होता जाए

सच्चा साथी शिवबाबा विचार ये मन में आए
किसी भी देहधारी का संग मन को ना लुभाए

चिन्ता सारी बाबा को देकर सेवा करते जाओ
काम है ये बाबा का तुम मन से मौज मनाओ...

...कर्मभोग आता देखकर बिल्कुल ना घबराओ
कल्प कल्प के विजयी समझकर इसे चुकाओ

हर परिस्थिति तुम्हें ज्ञान की धारणा कराएगी
अनुभवी बनाकर अगली क्लास में ले जाएगी

राह में आने वाले पत्थर से दीवार नहीं बनाना
उन्नति का पुल बनाकर विघ्नों से पार हो जाना

परिस्थिति करवाती अन्तिम परीक्षा की तैयारी
पास करें हर परीक्षा को ऐसी स्थिति हो हमारी

हिम्मत और निश्चय को अपना औजार बनाओ
विघ्नजीत बनकर तुम बाप समान कहलाओ

संघर्ष भरे जीवन से तुम बिल्कुल ना घबराना
विजेता बनने के लिए खुद को मजबूत बनाना

जितनी परिस्थितियां हमारे जीवन में आएगी
तीव्र गति से हमें सम्पूर्णता की ओर ले जाएगी

परिस्थिति के सम्मुख ना दिखाना तुम मजबूरी
उन्नति के लिए विघ्नों का आना भी है जरूरी

खुद को बहादुर समझकर विघ्नों से टकराओ
सर्व विघ्नों को चूर चूरकर आगे बढ़ते जाओ

अपना जीवन सबके लिए प्रेरणास्रोत बनाओ
औरों को आगे बढ़ाकर जीवन सफल बनाओ

ॐ शांति

वैराग्य का परिणाम

इस जग का कोई सुख मेरे मन को ना भाए
मुझको तो बस मेरा मूल वतन ही याद आए

खत्म हुआ भोजन और वस्त्रों का आकर्षण
बुद्धि से हुआ बाबा के प्रति पूरा ही समर्पण

इस जग का सुख क्षण भर में मिट जाएगा
महाविनाश का पल सब में वैराग्य जगाएगा

क्षणिक सुख के पीछे पल पल होता बर्बाद
प्रभु याद में रहकर अपना समय करें आबाद

महान वही जो अब ही वैराग्य धारण कर ले
मिटने वाली दुनिया से पहले खुद ही मर ले

सतयुगी संस्कारों की स्मृतियां मन में जगाएं
कलियुगी संस्कार मन से पूरे विस्मृत हो जाएं

हमें देखकर हर आत्मा भूले अपना देहभान
हो जाए वो पूरी ही पांच विकारों से अनजान

पुरानी दुनिया से वैराग्य नई दुनिया को लाएगा
अपना दैवी साम्राज्य फिर से धरा पर आएगा

ॐ शांति

अष्ट रत्न बनने वाली विशेषताएं अपनाओ

देह से न्यारा होकर ज्वालामुखी योग लगाओ
सम्पूर्ण पवित्रता की अवस्था को पूरा जमाओ

मन बुद्धि से बाबा के आगे अर्पित होते जाओ
बाबा की बुद्धि से अपने हर संकल्प मिलाओ

निरहंकारी होकर तुम अपना हर पार्ट बजाओ
ईश्वरीय की मर्यादाएं निष्ठावान होकर निभाओ

बाबा के संग अपना हर सम्बन्ध अटूट बनाओ
ईश्वरीय परिवार के प्रति समर्पण भाव जगाओ

निस्वार्थ भाव जगाकर तुम सेवा करते जाओ
अलौकिक व्यवहार से मनसा सेवा झलकाओ

श्रीमत विरुद्ध खुद को कभी ना तुम झुकाओ
सिर्फ श्रेष्ठ कर्म को जीवन का आधार बनाओ

बाबा से मिले स्नेह का अनुभव बढ़ाते जाओ
स्नेह के बदले सब पर रूहानी स्नेह बरसाओ

समय श्वांस और संकल्प को सेवा में लगाओ
सेवा प्रति आलस और अलबेलापन मिटाओ

बाप की सभी विशेषतायें जीवन में अपनाओ
ईश्वरीय खानदान में तुम अष्ट रत्न कहलाओ

ॐ शांति

पहला नंबर लेंगे

एकान्तवासी होकर आत्मचिन्तन करते जाओ
ज्ञान के हर बिन्दु का मन मन्थन करते जाओ

अंतर्मुखी होकर करो अपने भीतर का दर्शन
बैठो बाबा की याद में चलाओ चक्र स्वदर्शन

इसी अभ्यास से मन मन्दिर की होगी सफाई
सम्पूर्ण बनकर घर चलने की घड़ी अब आई

मिटने वाले इस जग से अपनी बुद्धि हटा दो
व्यर्थ संकल्पों का उत्पादन पूरा ही घटा दो

खा लो यह सच्ची कसम लेकर हाथ में जल
श्रीमत के बल पर खुद को पूरा ही देंगे बदल

अहंकार को छोड़कर स्वभाव बनाएंगे सरल
मोल्ड होंगे हम इतना जैसे जल होता है तरल

दधीचि मिसल देंगे हम यज्ञ में अपनी आहुति
विश्व नाट्यमंच पर श्रेष्ठ होगी हमारी प्रस्तुति

हमारी श्रेष्ठ चलन देखकर बाबा भी मुस्काएंगे
तीव्र पुरुषार्थ कर पहला नम्बर हम ही पाएंगे

ॐ शांति

बाबा से प्यार

ईश्वरीय याद की मधुर यात्रा निरन्तर हम बढ़ाएंगे
सतोप्रधानता की सीढ़ी पर खुद को रोज चढ़ाएंगे

निकालकर अवगुणी कांटे स्वयं को पुष्प बनाएंगे
अपनी पवित्रता की शक्ति से सबको हम लुभाएंगे

ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ने में लगता नहीं कोई भी खर्चा
याद की यात्रा में रहने से मिल जाता है ऊंचा दर्जा

किचड़ा पांच विकारों का बाबा आए हैं हमसे लेने
इसके बदले में विश्व की बादशाही हम सबको देने

याद की यात्रा में क्यों लड़ती है इतनी हमसे माया
माया से बचना हमको अब तक भी क्यों ना आया

शायद नहीं जागा है मन में बाबा के प्रति पूरा प्यार
बनाकर रखा है अब तक माया को अपना संसार

अपने ही विकर्म बन जाते पुरुषार्थ की राह में रोड़े
63 जन्मों तक हमने भी विकर्म नहीं किए हैं थोड़े

अपने किए विकर्मों से लाडलों कभी नहीं घबराना
श्रीमत बाबा से लेकर खुद को तुम मजबूत बनाना

चलना है सुखधाम तो सबके सुखदाता बन जाना
भूले से भी किसी को दु:ख का कांटा नहीं लगाना

देहभान मिटाकर केवल बापदादा से ही प्यार करना
संग है भगवान तुम्हारे माया से बिलकुल नहीं डरना

स्वस्थिति में रहकर सब परिस्थितियों को पार करना
आत्मिक भान जगाकर दैहिक भान समाप्त करना

ॐ शांति

श्रेष्ठ राजयोगी कहलाओ

मैं हूँ श्रेष्ठ राजयोगी खुद को ये महसूस कराओ
राजयोगी बनकर कर्मेंद्रियों के राजा कहलाओ

कर्मेन्द्रियों के वशीभूत प्रजायोगी ही कहलाते
मालिक होकर भी वे नौकर नौकर ही रह जाते

राजयोगी का ये टाइटल तुम कभी नहीं गंवाओ
विश्व महाराजा बनने का हर संस्कार अपनाओ

सर्वशक्तिमान पर विश्वास कायम रखते जाओ
सर्व सफलताओं को अधिकार स्वरूप में पाओ

दिलतख्तनशीन होने का खुद पर नशा चढ़ाओ
हिम्मत से आगे बढ़कर हर फ़िकरात मिटाओ

वरदानी बनकर औरों को वरदान बांटते जाओ
सम्पन्न बनकर औरों को सम्पन्न बनाते जाओ

अपने परिवर्तन से सबको प्रेरित करते जाओ
इन्द्रियजीत बनकर श्रेष्ठ राजयोगी कहलाओ

ॐ शांति

अपने घर हम जाएंगे

पीछे मुड़कर नही देखेंगे कदम बढ़ाए हैं आगे की ओर
नहीं डरेंगे नहीं झुकेंगे मचे कितना भी विघ्नों का शोर

पांच विकारों से आजादी पाने की हमने कसम है खाई
छोड़ दिया रावण का संग शिव की श्रीमत है अपनाई

छोड़कर सारे आकर्षण शिव को अपनी दुनिया माना
तन का दरवाजा खोलकर हमें बाबा के संग घर जाना

आओ हम करें तैयारी बाबा संग अपने घर चलने की
घड़ी आ गई है अब तो अपने हर संस्कार बदलने की

योग अग्नि में जलकर मिटा दें जीवन से पांचों विकार
सम्पूर्ण पवित्रता के गहनों से कर लें हम अपना श्रृंगार

सम्पूर्ण निर्विकारी बनकर बाबा का दिल तख्त पाएंगे
धर्मराज की सजाओं से बचकर अपने घर हम जाएंगे

ॐ शांति

त्यौहार पर विशेष

सच्ची दिवाली मनाएं

आओ हम सब मिलकर सच्ची दिवाली मनाएं
मन में भरे व्यर्थ कचरे को योगाग्नि में जलाएं

सफाई करें मन की इसमें शुभ संकल्प जगाएं
शुद्ध संकल्पों की सुगंध से संसार को महकाएं

पवित्रता धारण कर भ्रातृत्व की दृष्टि अपनाएं
नयनों में शीतलता अधरों पर मुस्कान सजाएं

शुभकामना भरी मिठाई एक दूजे को खिलाएं
ईश्वरीय ज्ञान के बम से माया रावण को उड़ाएं

मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की कसम आज खाएं
पवित्रता की मर्यादा से हम स्वर्ग धरा पर लाएं

ॐ शांति

रक्षा बंधन का त्यौहार

राखी का त्यौहार, पवित्रता की याद दिलाता
पवित्र दुनिया में जाने के, लायक हमें बनाता

मन में बसे हुए, सर्व विकारों की मैल मिटाता
मन के आंगन में, प्रभु प्यार का फूल खिलाता

सब त्योहारों में ये, सर्व श्रेष्ठ त्यौहार कहलाता
सबको पावन बनाने, कल्प में एक बार आता

बाबा आकर बच्चों के संग, रक्षा बंधन मनाता
भाई भाई का रिश्ता, हम सबके अन्दर जगाता

यही सच्ची रक्षा बंधन, हम सबको है मनानी
बाबा की श्रीमत पर, स्वयं को पावन बनाना

बाबा से प्यार का रिश्ता, हम सबको है निभाना
बाबा की याद में खोकर, बाबा जैसा बन जाना

नहीं रहना एक पल भी, हमें बिना उसकी याद
कर लेना है खुद को, देह के बंधनों से आज़ाद

कलाई पर बांधी, पवित्रता की प्रतिज्ञा की डोर
दूर नहीं वो दिन जब, आयेगी सतयुग की भोर

ॐ शांति

नारी शक्ति

Women's Day

बेबस व्यथित बेहाल होकर नारी क्यों बिलखती
लज्जा गँवाकर नारी क्यों मन ही मन सिसकती ।

बलिदानों की प्रतिमा नारी क्यों हो गई कमजोर
भरा हुआ क्यों विष का प्याला उसके चारों ओर ।

प्रसव पीड़ा को सहने वाली क्या क्या वो सहेगी
क्या उसकी झोली सदाकाल दुखों से भरी रहेगी ।

नव दुर्गा का प्रतीक है नारी शौर्य जिसमें समाया
फिर क्यों नारी को हमने इतना कमजोर बनाया ।

पद्मिनी, लक्ष्मी और सीता गवाही आज भी देती
धर्म की रक्षा के लिए नारी प्राण आहूत कर देती ।

वस्तु नहीं तू वासना की कर खुद की तू पहचान
जीवन हो महाजीवन तेरा समझते तुझे भगवान् ।

निष्प्राण हुई सृष्टि का करना तुझको नव निर्माण
अपनी प्रतिभा का देना है संसार को तुझे प्रमाण ।

अपने मनोबल को हिमालय से भी ऊंच बनाओ
अपनी दिव्यता की किरणें सारे विश्व में फैलाओ ।

मातृ रूप धरकर सबको तुम अमृत पान कराओ
भारत देश का खोया हुआ मान फिर से दिलाओ ।

ॐ शांति

राखी पर कविता

पवित्रता की राखी लेकर बाबा आया हमारे पास
बांधकर राखी करवाता पांच विकारों से संन्यास

जब भी छूए मेरी कलाई को पवित्र राखी की डोर
देखूं बाबा के नयनों में होकर मैं पूरा भाव विभोर

भूल गया मैं दैहिक भान मेरी आत्म चेतना जागी
दिव्य गुण अपनाए मैंने विकारों से हुआ मैं वैरागी

मेरी दृष्टि बनी पवित्र दिव्यता का हो रहा संचार
देह अभिमान के रोग का सहज हो रहा उपचार

रक्षा बंधन के अवसर पर ये कसम खाएं मिलकर
इस दुनिया में रहेंगे हम कमल पुष्प सा खिलकर

पवित्रता की प्रतिज्ञा को हम याद रखेंगे बारंबार
अपने जीवन में कभी नहीं आने देंगे पांच विकार

नहीं रखेंगे किसी के प्रति मन में कोई वैर विरोध
छोड़कर सारी व्यर्थ बातें करते रहेंगे आत्म शोध

विश्व सेवा में बीते अपने जीवन का हर एक क्षण
दुनिया को पावन बना देंगे करते हैं आज ये प्रण

ॐ शांति

General

बदलो अपनी जीवन (संगम युग)

संगम युग का अनमोल समय व्यर्थ नहीं गँवाना
नाजुकपना त्यागकर ख़ुद को सेवाधारी बनाना

बाप की मदद कर बनना ऊंच पद के अधिकारी
सहनशक्ति बढ़ाकर त्यागो बहानों की ये बिमारी

गर्मी जला दे सर्दी ठिठुरा दे बरसती रहे बरसात
करो ईश्वरीय सेवा लेकर हाथ में बाबा का हाथ

माया की ज़ंजीरो से देहधारी नहीं छुड़ा सकेगा
केवल शिवबाबा ही घर की तरफ उड़ा सकेगा

समझो मेरे बच्चों कैसे बिगड़ी बनी हुई तक़दीर
देह अभिमान ने आकर बनाया पूरा ही फ़क़ीर

स्वर्ग का सुख पाने के लिए ये इन्तजाम कर लो
अविनाशी ज्ञान रत्नों से अपनी झोलियाँ भर लो

बाप की याद में रहकर बनाओ एकरस अवस्था
श्रीमत अपनाकर बदलो अपनी जीवन व्यवस्था

ॐ शांति

ब्रह्मा बाबा के स्मृति दिवस पर कविता

संस्कार बड़े ही सुन्दर लेकर वो दुनिया में आया,
उसकी रूहानी छवि देखकर मन सबका हर्षाया

बढ़ती उम्र के संग उसकी आभा भी बढ़ती गई,
प्रति दिन उसकी रूहानी सुंदरता निखरती गई

श्रेष्ठ कर्म करते रहकर उसने जीवन किया महान
हर किसी को लगने लगा वो चलन से देव समान

रूहानी सुंदरता का ये राज़ उससे पूछा ना गया
उसकी छवि को निहारे बिना हमसे रहा ना गया

जान लिया हमने ये है शुद्ध संकल्पों का कमाल
इसीलिए तो कहलाया अपना ब्रह्मा बाबा महान

बाप होकर भी जिसने किया बच्चों का सम्मान
नहीं था जिसके भीतर अहंकार का नाम निशान

अलौकिक जन्म देकर माँ का पार्ट भी निभाया
छत्र छाया बनकर उसने सबको दिल में बसाया...

...बच्चों की हर कमी कमजोरी को उसने समाया
श्रीमत देकर उसने हर मुश्किल को पार कराया

एकांतप्रिय होकर भी बाबा थे सदा मिलनसार
श्रेष्ठ व्यव्हार से किया अपकारी पर भी उपकार

किया जिसने निरकारीपन का पक्का अभ्यास
यादों में बसाया था जिसने शिव को श्वासों श्वास

ईश्वरीय मत को जिसने हृदय से किया स्वीकार
निश्चय बुद्धि बनकर पाया विजय माला का हार

रहता था मुख पे सदा बेफ़िक्र बादशाही का नूर
सम्पूर्णता की मंझिल पाई करके पुरुषार्थ भरपूर

विश्व परिवर्तन का कर्तव्य वो आज भी निभाता
हम सब बच्चों से मिलने अब भी वतन से आता

पुरुषार्थ की गति बढ़ाकर कर्मातीत स्थिति पायें
इस वर्ष अपने आपको ब्रह्मा बाप समान बनायें

ॐ शांति

प्यार की दुनिया बनाओ

बनकर बिंदु रूप बिखेरते रहो रूहानी मुस्कान
अपनी दिव्यता से देते जाओ खुद की पहचान

यदि देख ले कोई हमे तो भूल जाए अपना तन
स्पष्ट याद आ जाए उसे अपना निराकारी वतन

मिट जाए विकारों की अग्नि शांति का हो राज़
बजे सदा चैन बंसी और बजे सुख का साज़

कितना हो कोई भी नाराज़ देना है सबको प्यार
नफ़रत को त्यागकर बनो प्यार देने में होशियार

करते रहें प्यार सभी को चाहे जाए अपनी जान
प्यार लुटाएं बनकर प्यार के सागर की संतान

गुज़रे चाहे किसी भी हालात में अपनी ज़िंदगी
प्यार बाँटना ही हमारे लिए हो ख़ुदा की बंदगी

प्रभु प्यार लुटाएंगे हम अवगुण सबके भुलाकर
चैन की सांस लेंगे हम प्यार की दुनिया बनाकर

ॐ शांति

प्रीत बुद्धि की निशानी

प्रीत बुद्धि बच्चे सदा अव्यक्त अलौकिक रहते,
कमल पुष्प जैसे न्यारे और बाप के प्यारे रहते

समय विनाश का समझकर जोड़े बाप से प्रीत,
पवित्र बनकर निभाते वे संगमयुग की यह रीत

बुद्धि की लगन रखते वे एक बाप से जोड़कर,
वस्तु व्यक्ति वैभव से हर नाता रखते तोड़कर

उनकी दृष्टि से बाप ओझल कभी न होते,
प्रीत बुद्धि बच्चे बाप से विमुख कभी न होते

स्मृति रखना मेरा तन एक पल में मिटने वाला,
मेरा अन्तिम समय मुझे पूछकर न आने वाला

यही स्मृति तुम्हें बाप की याद दिलाती जाएगी,
किसी और की याद तुम्हें कभी नहीं सताएगी

प्रीत बुद्धि बनकर जो प्रीत की रीत निभाएंगे,
सदा काल के लिए सारे संसार के सुख पाएंगे

ऐसे प्रीत बुद्धि बच्चों का बाप करते गुणगान,
विश्व की बादशाही देकर करते उनका सम्मान

ॐ शांति

बाँधेली का सौभाग्य

लौकिक बन्धन की डोरी का खेल बड़ा निराला
कड़ा बन्धन होकर भी ये बाप से जोड़ने वाला

बाँधेली हो या बाँधेला सभी कर्म बन्धन चुकाते
झूम झूमकर अपने बाबा की यादों के गीत गाते

दिखता नहीं वो नयनों से लेकिन याद वो आता
गोपियों का समय उसी की याद में गुजर जाता

घर गृहस्थी में रहकर जो खुद को पवित्र बनाते
अतीन्द्रिय सुख में रहकर वो सेवा का फल पाते

भाग्यवान बनाने वाले इस जीवन की बलिहारी
विकारी कुल की मर्यादाएं भस्म हुई इसमें सारी

परमात्मा की आज्ञा पर खुद को पावन बनाया
हर बाँधेली गोपी ने 21 जन्मों का भाग्य पाया

ॐ शांति

प्रकृति को पवित्र बनाओ

जहरीले धुएं से भरा हुआ हर शहर नजर आता
कैसे जीवन बचेगा किसी को समझ नहीं आता

शुद्ध हवा में सांस लेना हो गई वर्षों पुरानी बात
अब तो बस धुंआ ही पीते सुबह शाम दिन रात

आधुनिकता ने चारों और ऐसा आतंक फैलाया
इसमें घिरने वाला हर कोई लाचार नजर आया

प्रदूषण फैलाने के लिए इंसान हो गया मजबूर
भौतिक साधन का त्याग करना नहीं उसे मंजूर

लुप्त हुई अपने भारत से सात्विक जीवन शैली
इसी कारण सम्पूर्ण प्रकृति हो गई कितनी मैली

भौतिकता का आकर्षण सभ्यता को मिटाएगा
एक दिन इंसान रोगों का संग्रहालय बन जाएगा

आने वाली पीढ़ी को यदि तुम चाहते हो बचाना
सात्विक जीवन शैली अभी शुरू करो अपनाना

प्रदूषण मिटाने की नई विधियां निकालते जाओ
प्रदूषण फैलाने वाले साधन का उपयोग घटाओ

अपने आसपास चारों और पेड़ ही पेड़ लगाओ
बंजर पड़ी हर जमीन को तुम हरी भरी बनाओ

प्रकृति को पवित्र बनाने का आन्दोलन चलाओ
विश्व स्तर पर इस आन्दोलन को सफल बनाओ

ॐ शांति

समस्या का समाधान

बेहद की सेवा में बच्चों अपना समय लगाओ
आने वाली समस्या को इसी विधि से भगाओ

समस्या का चिन्तन करके नहीं बनो कमजोर
चिंता करके नहीं मचाओ समस्याओं का शोर

आत्मा परमात्मा का तुम चिन्तन करते जाओ
सर्वशक्तियाँ अपने अन्दर जागृत करते जाओ

औरों को गुण शक्तियों का सहयोग देते जाओ
सहयोग के बदले में दुआओं की लिफ्ट पाओ

दुआओं की लेनदेन तुम सीखो और सिखाओ
सदा प्रसन्न रहकर सबको प्रसन्न करते जाओ

कर्मयोगी बनकर अपना हर कर्म करते जाओ
सर्व समस्याओं का समाधान होता हुआ पाओ

ॐ शांति

प्राकृतिक आपदाओं से कैसे बचें

अपनी मर्यादा में रहना है प्रकृति का विधान
ऐसी मर्यादायें हमें सिखाते हैं शिव भगवान

अपने सुख के लिए प्रकृति को नहीं सताओ
प्रकृति के नियमानुसार जीवन को चलाओ

प्रकृति का नियम होता लक्ष्मण रेखा समान
उल्लंघन करके बन जाओगे दुखों के गुलाम

दोहन करके प्रकृति का किया उसे कंगाल
इसीलिए प्रकृति को क्रोध आया विकराल

फैलाई तबाही वर्षा जल को बाढ़ बनाकर
अपने साथ कितने जीवन ले गई बहाकर

पेड़ काट काटकर भौतिक साधन जुटाया
हरी भरी धरती को मानव ने बंजर बनाया

महासागर का जल उमड़ घुमड़कर आया
इसका तीव्र वेग कोई सहन नहीं कर पाया

धरती की बंजरता को जड़ से तुम मिटाओ
अपने चारों तरफ हरे भरे पेड़ तुम लगाओ

प्रकृति का वंदन करो करके उसका पालन
प्राकृतिक मर्यादा में करो जीवन का संचालन

इसी विधि से प्रकृति भी मर्यादित हो जाएगी
दुख देना छोड़कर सुखमय जीवन बनाएगी

ॐ शांति

सरलचित स्वभाव से सफलता

सर्वस्व त्याग है ब्राह्मण जीवन का मूल संस्कार
त्याग है सरलता और सहनशीलता का आधार

सरल और सहनशील ही आकर्षणमूर्त कहलाते
सरलचित्त बनने वाले सबको सरलचित्त बनाते

अपनी वाणी और कर्म में तुम सार को समाओ
जो कुछ सुनो और देखो उसमें सार ही उठाओ

हर बात में जब खुद को आलराउण्ड बनाओगे
हर कमी को अपने बुद्धि से पूरा जब मिटाओगे

सरलता के गुण का जब सेम्पल बनते जाओगे
तब औरों को भी सरल पुरुषार्थी बना पाओगे

ज्ञानी होकर रूहानी बच्चे का संस्कार जगाओ
ऐसे फॉलो फादर करके सरलचित्त बन जाओ

अपना हाँ जी का पार्ट जितना पक्का बनाओगे
अपने संस्कार उतने ही तुम सरल बना पाओगे

सरलता और सहनशीलता ही शीतलता लाती
यही विशेषता कठिन कार्य को सहज बनाती

मनसा वाचा कर्मणा में खुद को सरल बनाओ
इसी विशेषता से सबको फरिश्ता नजर आओ

सरलता के संग खुद को शक्ति स्वरूप बनाओ
सहनशीलता के संग सामने की शक्ति जगाओ

स्तुति को अपनी स्थिति का आधार ना बनाओ
अपनी स्थिति से स्तुति लायक खुद को बनाओ

सरलता का स्वभाव समेटने की शक्ति दिलाता
समेटने के संग संग सामना करना भी सिखाता

व्यर्थ संकल्प मिटाकर हमें सबका प्रिय बनाता
सच्चाई सफाई के संग जीवन में मधुरता लाता

सरलता से जीवन में स्पष्टता और श्रेष्ठता आती
यही विशेषताएं बच्चों तुम्हें बाप समान बनाती

ॐ शांति

मान सम्मान की इच्छा से मुक्त

सबके मन में बैठी इच्छा सम्मान सबसे पाने की
औरों के सामने खुद को कुछ बिशेष दिखाने की

जो जैसा है उसको वैसा ही कर लो तुम स्वीकार
सम्मान देने का कहलाता एकमात्र यही संस्कार

आध्यात्मिकता को बनाओ सम्मान का आधार
देह के आधार पर सम्मान नहीं करना स्वीकार

देखकर रूप अनादि करना सबका तुम सम्मान
देह देखकर ना करना कभी किसी का अपमान

युद्ध हजारों किये हमने मान अपमान के कारण
घर घर की कलह क्लेश का एक यही है कारण

झूठे सम्मान से मुक्त होना साक्षी भाव जगाकर
अपने बिंदू स्वरूप में रखना खुद को टिकाकर

बिंदू रूप का ये अभ्यास साक्षी भाव जगायेगा
झूठे सम्मान की अभिलाषा से मुक्ति दिलाएगा

ॐ शांति

Thank you!